अकरकरा

की व्यावसायिक खेती

एक बहुगीनी जड़ी बूटी

CLICK-N-GROW
Agroventures Pvt Ltd
Farmer's e-Buddy

परिचय

अकरकरा की खेती मुख्य रूप से औषधीय पौधे के रूप में की जाती है। इसके पौधे की जड़ों का इस्तेमाल आयुर्वेदिक दवाइयों को बनाने में किये जाता है। अकरकरा के इस्तेमाल से कई तरह की बिमारियों से छुटकारा मिलता है। आयुर्वेद में अकरकरा का प्रयोग लगभग 400 वर्षों से किया जा रहा है। अकरकरा की खेती 6 से 8 महीने की होती है। इसके पौधों को बढ़ने के लिए समशीतोष्ण जलवायु की आवश्यकता होती है। भारत में इसकी खेती मुख्य रूप से मध्य भारत के राज्यों में की जाती है। जिसमें उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, गुजरात, हरियाणा और महाराष्ट्र जैसे राज्य शामिल हैं। इसके पौधे अत्यधिक गर्मी या अत्यधिक ठंड से प्रभावित नहीं होते हैं। इसका पौधा जमीन की सतह पर ही गोलाकार रूप में फैल जाता है। जिस पर पत्तियाँ छोटी-छोटी आती हैं। इसकी खेती के लिए मिट्टी का पीएच. मान सामान्य होना चाहिए।

अकरकरा का वानास्पतिक नाम Anacyclus pyrethrum (L.) Lag. (ऐनासाइक्लस पाइरेथम) Syn- Anacyclus officinarum Hayne होता है। अकरकरा Asteraceae (ऐस्टरेसी) कुल का होता है। अकरकरा को अंग्रेजी में Pellitory Root (पेल्लीटोरी रूट) कहते हैं।

अकरकरा को भारत के भिन्न भिन्न प्रांतों में अलग-अलग नामों से पुकारा जाता है, जैसे- संस्कृत - (आकारकरभ, आकल्लक), हिंदी - (अकरकरा), गुजराती - अकोरकरो (Akorkaro), तेलगु - अकरकरमु (Akarakaramu), अंग्रेजी - स्पैनिश पेल्लीटोरी (Spanish pellitory) आदि।

अकरकरा के फायदे और औषधि उपयोग

अकरकरा के फायदे अनेक हैं। अपने एंटीऑक्सीडेंट गुणों के कारण, अकरकरा का उपयोग अक्सर गठिया के कारण होने वाले दर्द और सूजन को ठीक करने में किया जाता है। यह पाचन में भी मदद करता है क्योंकि यह लार और पाचन एंजाइमों के स्राव को ट्रिगर करता है।
पौधे में कामोत्तेजक गुण भी होते हैं जो टेस्टोस्टेरोन स्तर को बनाए रखकर पुरुषों में यौन इच्छा और प्रदर्शन को बढ़ाते है। यह अपनी मूत्रवर्धक गतिविधि के कारण पेशाब बढ़ाता है और शरीर को विषहरण करने में भी सहायता करता है । आइए इस बारहमासी जड़ी बूटी के फायदों के बारे में विस्तार से जानें।

- गठिया के प्रबंधन के लिए, अकरकरा बहुत मददगार हो सकता है
- अकरकरा अपच प्रबंधन में बहुत मदद करता है।
- अरकारा अपने एनाल्जेसिक और एंटीऑक्सीडेंट गुणों के कारण दांत दर्द को प्रबंधित करने में मदद कर सकता है।
- अकरकरा कीड़े के काटने पर फायदेमंद है या नहीं, इसके बारे में ज्यादा वैज्ञानिक प्रमाण नहीं हैं।
- अकरकरा याददाश्त बढ़ाने में मदद कर सकता है क्योंकि यह एंजाइम (कोलेलिनेस्टरेज़) की क्रियाओं को रोकता है, जो स्मृति हानि के लिए जिम्मेदार है।
- अकरकरा पुरुष यौन प्रदर्शन को बढ़ाता है। कुछ पशु परीक्षणों में पाया गया है कि यह प्रजनन क्षमता को बढ़ाने वाले प्रभावों के साथ-साथ कामेच्छा बढ़ाने की क्षमता भी रखता है।
- अरकरा अग्नि (पाचन अग्नि) को बेहतर बनाने में मदद करता है जो भोजन को आसानी से पचाने में सहायक है।

CLICK-N-GROW
Agroventures Pvt Ltd
Farmer's e-Buddy

पौधे की तैयारी

अकरकरा के पौधे को बीज और पौधे दोनों रूप में उगाया जा सकता है। इसकी पौध भी बीज के माध्यम से ही नर्सरी में तैयार की जाती है। नर्सरी में पौधे तैयार करने के लिए जमीन में उगाने से पहले इसके बीजों को गोमूत्र और ट्राइकोडर्मा से उपचारित करना चाहिए। ताकि पौधों को शुरुआती बीमारियों से बचाया जा सके। बीजों को उपचारित कर एक माह पूर्व प्रो-ट्रे में बो दिया जाता है। बीज तैयार होने के बाद इन्हें उखाड़कर खेत में तैयार क्यारियों में लगा दिया जाता है। एक एकड़ की खेती के लिए 5 किलो बीज की जरूरत होती है, जो 1000 रुपए प्रति किलो के हिसाब से मिल जाता है।

रोपण विधि और समय

अकरकरा की खेती बीज और पौध दोनों तरीकों से की जाती है। बीज के रूप में इसकी खेती के लिए लगभग पांच किलोग्राम बीज पर्याप्त होता है। इसके बीज को खेत में उगाने से पहले गोमूत्र और ट्राइकोडर्मा से उपचारित करना चाहिए। उपचारित बीज को खेत में रोपते समय मेड पर रोपित किया जाता है। इसके लिए मेड से मेड की दूरी एक फिट के आसपास होनी चाहिए। जबकि मेड़ पर इसके पौधों को 15 सेंटीमीटर की दूरी पर दोनों तरफ दो से तीन सेंटीमीटर की गहराई में लगाना चाहिए। पौधे के रूप में इसके पौधों का रोपण भी खेत में ही किया जाता है। मेड़ पर इसके पौधे 15 से 20 सेंटीमीटर की दूरी पर जिग जैज तरीके से लगाना चाहिए। और पौधों की रोपाई के दौरान उन्हें चार से पांच सेंटीमीटर की गहराई पर लगाना चाहिए। शाम को पौधे को लगाना हमेशा अच्छा होता है। क्योंकि शाम के समय की गई रोपाई से पौधों का अंकुरण बेहतर होता है।

इसके बीजों से नर्सरी बनाने का समय जून- जुलाई या अगस्त होता है और बीजों से तैयार पौधों को अक्टूबर से नवम्बर तक मुख्य भूमि में लगाया जाता है।

अनुकूल जलवायु

अकरकरा की खेती के लिए समशीतोष्ण जलवायु सबसे उपयुक्त है। भारत में इसकी खेती रबी फसलों के साथ की जाती है। इसके पौधों को अधिक धूप की आवश्यकता होती है। इस कारण छायादार स्थानों पर इसकी खेती नहीं की जाती है। हालांकि इसका पौधा छायादार जगहों में अच्छी तरह से विकसित हो जाता है। लेकिन पौधे की जड़ें छायादार स्थानों में अच्छी तरह से नहीं बनती हैं, जिसके लिए इसकी खेती की जाती है। इसकी खेती के लिए ज्यादा बारिश की जरूरत नहीं होती है। अकरकरा के पौधों पर अत्यधिक ठंड या गर्मी का प्रभाव नहीं देखा जाता है। इसके पौधे शीतकाल में पाले को भी सहन कर लेते हैं।

इसके पौधों को शुरू में अंकुरित होने के लिए 20 से 25 डिग्री तापमान की जरूरत होती है। इसके बाद इसके पौधे न्यूनतम 15 और अधिकतम 30 तापमान में अच्छी तरह विकसित हो जाते हैं। इसके पौधों के पकने के दौरान तापमान 35 डिग्री के आसपास रहना अच्छा रहता है।

CLICK-N-GROW
Agroventures Pvt Ltd
Farmer's e-Buddy

उपयुक्त मिट्टी

अकरकरा की खेती के लिए उचित जल निकासी वाली उपजाऊ भूमि की आवश्यकता होती है। जिसमें काली मिट्टी, लाल मिट्टी, दोमट मिट्टी शामिल है, जबकि जलभराव और भारी मिट्टी में इसकी खेती नहीं की जा सकती है। इसकी खेती के लिए भूमि का पीएच मान लगभग 6-8 होना चाहिए।

खेत की तैयारी

अकरकरा की खेती के लिए खेत की मिट्टी भुरभुरी और मुलायम होनी चाहिए। क्योंकि अकरकरा एक कंद वाली फसल है। जिसके फल जमीन के अन्दर विकसित होते हैं। इसलिए इसकी खेती की तैयारी करते समय शुरूआत में मिट्टी पलटने वाले हलों से खेत की गहरी जुताई करके खेत को कुछ दिनों के लिए खुला छोड़ दें। इसके बाद खेत में उचित मात्रा में खाद डालकर मिट्टी में अच्छी तरह मिला दें। खाद को मिट्टी में मिलाने के बाद खेत में पानी चलाकर जुताई करें। कुछ दिनों की जुताई के बाद जब जमीन की ऊपरी सतह सूखी दिखाई देने लगे तो खेत की फिर से जुताई कर देनी चाहिए। भूमि तैयार करते समय नीचे दी गई खाद एवं उर्वरकों को मिट्टी में मिला देना चाहिए।

रोग और उनकी रोकथाम

अकरकरा की खेती में अभी तक कोई विशेष रोग नहीं देखा गया है। लेकिन जलभराव के कारण इसके पौधों में सड़न रोग लग जाता है। जिससे इसकी उपज को काफी नुकसान होता है। इस कारण इसके पौधों में जलभराव की स्थिति उत्पन्न न होने दें।

सिंचाई

अकरकरा के पौधों को खेत में लगाने के तुरंत बाद उनकी सिंचाई कर देनी चाहिए। ताकि पौधे को अंकुरण में किसी प्रकार की परेशानी का सामना न करना पड़े। अकरकरा के पौधों की पहली सिंचाई के बाद बीजों के अंकुरित होने तक खेत में नमी की मात्रा बनाए रखने के लिए शुरुआत में हल्की सिंचाई करनी चाहिए। अकरकरा की खेती शीत ऋतु में की जाती है। इस कारण इसके पौधों को अंकुरण के बाद कम सिंचाई की आवश्यकता होती है। इसके पौधों को पकने के बाद तैयार होने के लिए केवल 5 से 6 सिंचाइयों की आवश्यकता होती है। इसके पौधों में अंकुरण के 20 से 25 दिन के अन्तराल पर पानी देना चाहिए।

CLICK-N-GROW
Farmer's e-Buddy

खरपतवार नियंत्रण

अकरकरा की खेती में शुरुआत में खरपतवार नियंत्रण बहुत जरूरी है। इसकी खेती में नील निराई द्वारा ही खरपतवार नियंत्रण करना चाहिए। क्योंकि खरपतवार को रासायनिक रूप से नियंत्रित करने पर इसके कंदों की गुणवत्ता में कमी देखी जाती है। इसके पौधों की पहली निराई रोपाई के लगभग 20 दिन बाद करनी चाहिए। जबकि शेष गुड़ाई पहली गोडाई के 20 से 25 दिन के अन्तराल पर करनी चाहिए। इसके पौधों की तीन निराई पर्याप्त होती है।

खुदाई और पौधों की सफाई

अकरकरा के पौधे खेत में रोपाई के लगभग 6 महीने बाद खुदाई के लिए तैयार हो जाते हैं। पूर्ण विकसित पौधों की पत्तियाँ पीली दिखाई देने लगती हैं और पौधा मुरझाने लगता है। इस दौरान इसकी खुदाई की जानी चाहिए। गहरी मिट्टी उखाड़ने वाले हलों से इसकी खुदाई करनी चाहिए। इसकी जड़ों को खोदने से पहले पौधे पर बने बीज के डंठल को तोड़कर एकत्र कर लेना चाहिए। जिससे प्रति एकड़ दो से तीन क्विंटल बीज प्राप्त हो जाता है।

जड़ों को उखाड़ने के बाद उन्हें साफ करके काटकर पौधों से अलग कर लिया जाता है। जड़ों को अलग करने के बाद, उन्हें छायादार स्थान पर या हल्की धूप में दो से तीन दिनों के लिए सुखाया जाता है, बोरियों में भरकर बाजार में बेचा जाता है। इसकी एक जड़ वाली फसल का उच्च बाजार मूल्य प्राप्त होता है।

उपज और लाभ

अकरकरा की प्रति एकड़ फसल से एक बार में तीन से साढ़े तीन क्विंटल बीज और 8 से 9 क्विंटल जड़ें प्राप्त हो जाती हैं। इसकी जड़ों का बाजार भाव 10 हजार रुपए प्रति क्विंटल के आसपास मिलता है। वहीं इसके बीज का बाजार भाव 10 से 15 हजार रुपए प्रति क्विंटल के आसपास मिलता है। जिससे किसान भाई एक बार में एक एकड़ से लेकर एक लाख तक आसानी से कमा सकते हैं।

प्रति एकर कुल खर्चे

क्र.	ब्योरे	कार्य	प्रथम वर्ष
1	**जमीन तैयार करना**	जुताई, समतल करना इ.	2,000
2	**जैविक खाद**	जैविक कीटनाशक, ग्रोथ बूस्टर ई.	5,000
3	**अकरकरा बीज**	5 किलो x 1000 प्रति किलो	5,000
4	**बुवाई**	पौध की बुवाई	1,000
5	**बिजली का बिल**	सिंचाई के लिए	1,000
6	**कटाई**	फूलों की कटाई एंव जड़ों की खुदाई	4,000
7	**पैकिंग**	फूलों एंव जड़ों की पैकिंग करने हेतु	1,000
8	**ट्रांसपोर्टेशन**	बीज, खाद एंव उत्पाद को लगने वाला ट्रांसपोर्टेशन खर्चा	15,000
9	**संपूर्ण खर्च**	**34,000/-**	

CLICK-N-GROW
Agroventures Pvt Ltd
Farmer's e-Buddy

प्रति एकर कुल आय

क्रमांक	पैदावार	विवरण	राशि रुपये में
1	**सूखे बीज**	250 किलो x रू. 90 प्रति किलो	रू. 22,500/-
2	**सुखी जड़ें**	700 किलो x रु.150 प्रति किलो	रू. 105,000/-
3	**कुल आय**		**रु.127,500/-**
4	**कुल खर्चे**		**रु.34,500/-**
5	**शुद्ध आय/ नफ़ा (6 माह)**		**रु.93,500/-**

CLICK-N-GROW
Agroventures Pvt Ltd
Farmer's e-Buddy

COMPANY PROFILE

Click-N-Grow Agroventures Pvt. Ltd.

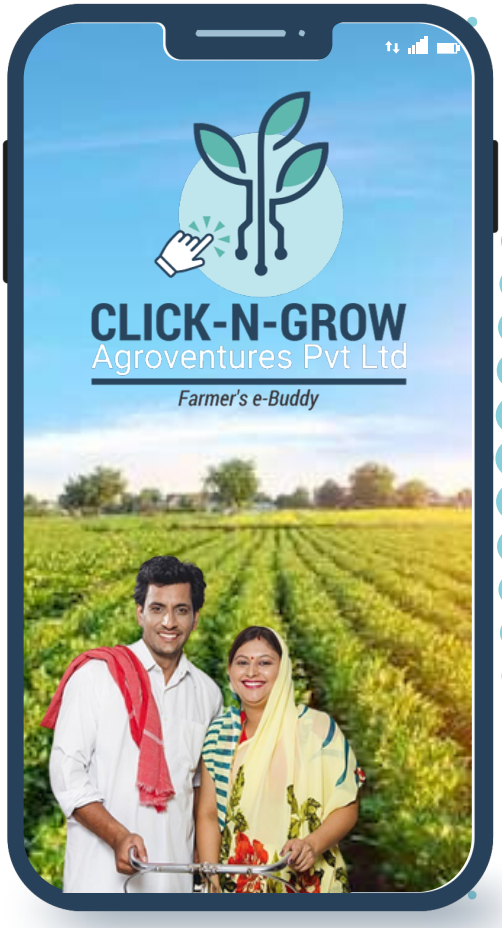

CLICK-N-GROW
Agroventures Pvt Ltd
Farmer's e-Buddy

eKisanZone Farmer's e-Buddy | MITCAD | Contract Farming | KisanSAT Agro Advisory Services | Agri Export Grow Farmer, Grow India

INTERLINKED FARM SOLUTIONS AT ONE PLACE

Click-N-Grow Agroventures Pvt. Ltd.

Corporate Address: C/17-18, Dakshata Nagar Complex, Sindhi Camp, Akola, Maharashtra- 444001
Registred Office: C/2, Matoshri Apt, Sane Guruji Nagar, Khadki, Akola, Maharashtra- 444004

Mobile: +91-7775008660, 7030281210, 9730951149

Email: ekisanzone.com | info.mitcad@gmail.com | ekisanzone1@gmail.com

Website: www.ekisanzone.com | www.kisansat.ekisanzone.com